

अमूर्त विचार और शारीरिक हाव-भाव

आम तौर पर माना जाता है कि अमूर्त विचार की क्षमता ही हमें इन्सान बनाती है। लेकिन हाल ही में कुछ अनुसंधानों से संकेत मिले हैं कि हमारे शरीर के हाव-भाव और चेष्टाएं इन विचारों को प्रभावित करती हैं। वैसे साधारणतया यही माना जाता है कि शरीर की भूमिका मूलतः पर्यावरण से संवेदनाएं ग्रहण करने और पर्यावरण पर क्रिया करने तक सीमित हैं। मगर ताज़ा अनुसंधान बताते हैं कि हमारे शरीर अमूर्त विचारों के सृजन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शरीर और अमूर्त विचारों को लेकर जो अनुसंधान हुए हैं, उनका आधार मनोभावों को व्यक्त करने वाले मुहावरे हैं। जैसे हम कहते हैं कि 'मन उछल रहा है'। या कभी-कभी कहा जाता है कि 'गणित पर उसकी अच्छी पकड़ है।' इन मुहावरों का सम्बंध शरीर, उसकी चेष्टाओं और मनोभावों से है। इन मुहावरों के आधार पर करीब 30 वर्ष पहले भाषा विज्ञानी जॉर्ज लेकोफ और दार्शनिक मार्क जॉनसन ने 'मुहावरा सिद्धांत' का प्रतिपादन किया था जिसके मुताबिक हम अमूर्त सोचने में शरीर की क्रियाओं की उपमाओं का सहारा लेते हैं। अब इस सिद्धांत के पक्ष में कुछ प्रमाण भी आए हैं।

जैसे, टोबिएस लोट्शर ने एक परीक्षण में पाया है कि संख्याएं सोचने की हमारी क्षमता का सम्बंध शरीर की क्रियाओं से है। उन्होंने दाहिने हाथ से काम करने वाले 12 व्यक्तियों को लिया और उनसे कहा कि वे 1 से 30 के बीच की संख्याएं बेतरतीब क्रम में बोलें, कुल 40 संख्याएं बोलना थीं। जब ये लोग बेतरतीब क्रम में ये संख्याएं बोल रहे थे तब शोधकर्ताओं ने इनकी आंखों की गति को रिकॉर्ड किया। बाद में विश्लेषण करने पर पता चला कि आंखों की गति को देखकर बताया जा सकता है कि वह व्यक्ति जो अगली संख्या बोलेगा वह पिछली संख्या से बड़ी होगी या छोटी। और तो और, यह बताना भी संभव था कि वह संख्या पिछली संख्या से कितनी छोटी या बड़ी होगी।

शोधकर्ताओं ने पाया कि संख्या बोलने से पहले यदि व्यक्ति बाईं ओर तथा नीचे की ओर देखे तो संख्या पहले

वाली संख्या से छोटी होगी जबकि यदि वह ऊपर व दाईं ओर देखे तो संख्या बड़ी होगी। लोट्शर व साथियों का तर्क है कि आम तौर पर हम ऊपर को 'अधिक' से जोड़ते हैं। इस प्रयोग के परिणाम दर्शाते हैं कि संख्या जैसे अमूर्त विचार भी शारीरिक गतियों से सम्बद्ध होते हैं।

मगर इस प्रयोग से यह पता नहीं चलता कि आंखों की गति विचारों को नियंत्रित करती है या विचार आंखों की गति को नियंत्रित करते हैं। एक अन्य प्रयोग इस मुद्दे पर रोशनी डालता है।

मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट फॉर सायकोलिंग्विस्टिक्स के डेनियल केसासेन्टो के प्रयोग में 24 वालंटियर्स को कुछ कंचों को एक निचले खाने में से उठाकर ऊपर के खाने में या ऊपर के खाने में से उठाकर निचले खाने में रखने को कहा गया। साथ ही उन्हें अपना कोई अनुभव सुनाना था, जिसमें या तो उन्हें गर्व महसूस हुआ हो या वे शर्मिंदा हुए हों। प्रयोग के नतीजों से पता चला कि वालंटियर्स अपनी शारीरिक गति के अनुरूप अनुभव को ज़्यादा अच्छे से याद कर पाते थे। जैसे जब वे कंचों को ऊपर से नीचे रखते थे तो नकारात्मक भावनाओं वाले अनुभव ज़्यादा याद कर पाते थे जबकि कंचों को ऊपर रखते हुए सकारात्मक अनुभव हावी होते थे।

तो क्या यह मानना ठीक होगा कि शारीरिक क्रियाएं हमारे विचारों को ढालती हैं? केसासेन्टो के अगले प्रयोग से इसका जवाब कुछ हद तक मिलता है।

कंचों को ऊपर या नीचे करते हुए वालंटियर्स से कुछ सामान्य सवाल पूछे गए। जैसे 'कल क्या हुआ था?' यह देखा गया कि जब वे कंचों को नीचे से ऊपर रख रहे थे, तब ज़्यादा संभावना इस बात की थी कि वे कोई सकारात्मक अनुभव सुनाएंगे।

केसासेन्टो का मत है कि यदि हमारी शारीरिक गतियों का ऐसा असर विचारों पर होता है तो क्या उन लोगों के विचार बहुत अलग होंगे जिनके शरीर की गतियां अलग

होती हैं। जैसे बाएं हाथ से काम करने वाले लोग यानी खबू। केसासेन्टो ने 246 दाएं हाथ वाले और 40 खबू लोगों को एक काम दिया। उन्हें कुछ कार्टून दिखाए गए। कार्टून के चित्र जोड़ियों में थे। प्रत्येक जोड़ी के चित्र एक जैसे थे और दोनों के बीच एक सवाल लिखा था। जैसे, जोड़ी में से कौन-सा चित्र ज़्यादा आकर्षक है या कौन-सा चित्र कम आकर्षक है, कौन-सा ज़्यादा ईमानदार नज़र आता है वगैरह। यह देखा गया कि 210 वालंटियर्स में दाएं

या बाएं के प्रति स्पष्ट रुझान था। आम तौर पर खबू लोगों ने बाईं ओर के चित्र में ज़्यादा सकारात्मक गुण देखे जबकि दाएं हाथ से काम करने वाले लोगों को यही गुण दाईं ओर वाले चित्र में नज़र आए।

इन प्रयोगों से लगता है कि हमारे अमूर्त विचारों पर हमारे शारीरिक लक्षणों का और गतिविधियों का असर पड़ता है। वैसे इन प्रयोगों के आधार पर कुछ भी निर्णायक रूप से कहना संभव नहीं है। (स्रोत फीचर्स)